मनुस्मृति में गुणत्रय पर आधारित त्रिविधा सृष्टि

गीता शुक्ला

संक्षिप्तिका

मनुस्मृति व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास तथा सामजिक व्यवस्था को सुनिश्चित रूप देने व व्यक्ति की लौकिक उन्नति और पारलौकिक कल्याण का पथ प्रशस्त करने में शाश्वत महत्त्व का एक परम उपयोगी शास्त्र ग्रन्थ है वास्तव में मनुस्मृति भारतीय आचार–संहिता का विश्वकोश है। प्रस्तुत 'शोधपत्र' में सत्त्व रज और तम की संज्ञा से अभिहित गुणत्रय का स्वरूप, प्रमुख लक्षण, सामान्य लक्षण, तीनों गुणों के फल अथवा परिणाम, तीनों गुणों के अनुसार प्राप्त होने वाली उत्तम, मध्यम व अधम गतियों का निरूपण किया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि कैसे परस्पर विरोधी होते हुए भी तीनों गुण दीपक के समान पुरूष के प्रयोजन की सिद्धि के लिए कार्य करते हैं। 'गुणत्रय' पर आधारित 'त्रिविधा सृष्टि' का विवेचन भी किया गया है।

मनुस्मृति वह धर्मशास्त्र है जिसकी मान्यता विश्वविश्रुत है। मनुस्मृति को विश्व की एक अमूल्य निधि माना जाता है– 'मनुस्मृति मानवधर्मशास्त्र का एक आकर ग्रन्थ है। भारत में वेदों के बाद सर्वाधिक मान्यता और प्रचलन मनुस्मृति का ही है। मनुस्मृति केवल प्राचीनता की दृष्टि से ही नहीं अपितु सर्वांगीणता और विशुद्धि की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

मनुस्मृति भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। धर्मशास्त्रीय ग्रन्थकारों के अतिरिक्त शंकराचार्य शबरस्वामी जैसे दार्शनिक भी प्रमाणरूपेण इस ग्रन्थ को उद्धृत करते हैं। परम्परानुसार यह स्मृति स्वयंभुवमनु द्वारा रचित है। मनुस्मृति का एक श्लोक उसके व्याख्याता के रूप में स्वयंभुव मनु की ओर संकेत करता है।[1]

स्वयं मनु के वंश में उत्पन्न छः मनु और है।

(1) स्वारोचितष (2) औत्तम (3) तामस (4) रैवत (5) चाक्षुष[2] (6) वैवस्वत

मनु की प्राचीनता इसी बात से सिद्ध होती है कि ऋग्वेद में मनु का मानव जाति का पिता कहा गया है।[3] जिस प्रकार वेदों में मनु का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार मनुस्मृति में वेदों को ज्ञान का मूल माना गया है–

वेदोऽखिलो धर्ममूलम् स्मृतिशीले च तद्विदाम्।[4]

और मनु ने जो कुछ कहा है सब वेद में विद्यमान है–

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।[5]

तैत्तिरीय संहिता के अनुसार–

'मनु ने जो कुछ कहा है वह मनुष्य के लिए भेषज है।[6]
और भी– एतद्देशप्रसूतस्य.....पृथिव्यां सर्वमानवाः।।[7]

यह श्लोक भी मनुस्मृति के महत्त्व का परिचायक है।

स्मृ धातु से क्तिन् प्रत्पय लगकर निष्पन्न स्मृति शब्द का अर्थ है स्मरण (याद)। स्मृतियों का प्रचार–प्रसार धर्मसूत्रों के समानान्तर ही होता रहा है। धर्मसूत्रों और स्मृतियों में कोई विषयगत भेद नहीं है केवल शैली का ही भेद कहा जा सकता है। स्मृतिशब्द का प्रयोग तैत्तिरीय आरण्यक में भी हुआ है।[8]

स्मृति के प्रतिपाद्य को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) आचार (2) व्यवहार (3) प्रायश्चित्त

आचार– मनुष्य की भौतिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए आचार आवश्यक है। आचार की परिशुद्धि के अनुसार इसका विस्तृत विवेचन मिलता है।

व्यवहार– सामाजिक जीवन में दूसरों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए? देशकाल व परिस्थिति के अनुसार इसका विस्तृत विवेचन मिलता है।

प्रायश्चित्त– प्रायश्चित्त स्वानुशासन की व्यवस्था है तथा निषिद्ध तथा अनुचित आचरण करने पर स्वप्रदत्त दण्डविधान की प्रक्रिया है और शारीरिक तथा मानसिक रूप से कृत पाप के विनाश का साधन है।

सांख्यदर्शन में सत्त्व, रज औ तम की संज्ञा 'गुण' है। ये गुण परस्पर विरोधी होकर भी पुरूष के प्रयोजन की सिद्धि के लिए दीपक के समान मिलकर कार्य करते हैं।

सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरूवरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।।[9]

सत्त्वगुण सुखात्मक रजोगुण दुःखात्मक तथा तमोगुण मोहात्मक है।[10] में गुणों के वैधर्म्य का निरूपण है– प्रीत्यप्रीतिविषादाद्यैगुणानामन्योन्यं वैधर्म्यम् तीनों गुणों में परस्पर उपमर्दन की प्रवृत्ति पाई जाती है। अर्थात कोई एक गुण अन्य दो को अभिभूत करके रहता है।

प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्तिनियमार्थाः।
अन्योन्याभिभवाश्रयजननमिथुनवृत्तयश्च गुणाः।।[11]

श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया है कि–

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।।[12]

मनुस्मृति में गुणत्रय का विस्तृत विवेचन इस प्रकार से किया जा सकताहै।

सत्त्वं रजस्तमश्चैव त्रीन्विद्यात्मनो गुणान्।
यैर्व्याप्येमान्स्थितो भावान्महान्सर्वानशेषतः।।[13]

अर्थात् सत्त्व, रज और तम (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) आत्मा (जीव की प्रकृति) के तीन गुण हैं इन तीनों गुणों से व्याप्त होकर ही यह महान् स्थावर और जंगम रूप संसार सम्पूर्ण भावों को विशेषता से ग्रहण करके अवस्थित है।

जिस प्राणी (मनुष्य) के शरीर में जिस गुण की अधिकता और विशिष्टता होती है, वह प्राणी उस गुण विशेष के लक्षणों से सम्पन्न हो जाता है।

यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते।
तं तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरीरिणम्।।[14]

ज्ञान (वस्तु) को यथार्थ रूप में जानना अथवा यथार्थवस्तु (परमात्मा–आत्मा) को जानना सत्त्वगुण का इसके विपरीत अर्थात् जानने योग्य (यथार्थवस्तु) को न जानना तमोगुण का तथा राग–द्वेष रजोगुण का लक्षण है। सभी प्राणियों का शरीर उक्त तीनों गुणों से व्याप्त रहता है।

प्रत्येक गुण का अपना स्वरूप है। सभी का एक–एक प्रमुख लक्षण है तथा सबका अपना–अपना सामान्य लक्षण है। प्रत्येक गुण का फल है प्रत्येक गुण की प्रवृत्ति है। कौन सा गुण प्रधान होने पर क्या परिणाम होता है? आदि बिन्दुओं को मनुस्मृति में इस प्रकार से वर्णित किया गया है। उक्त गुणत्रय पर आधारित त्रिविधा सृष्टि ही इस शोध आलेख का विषय है।

सत्त्वगुण–

जिस गुण से आत्मा प्रसन्न हो उठे, उसे शान्ति और शुद्ध प्रकाश की अनुभूति हो तथा उसे धारण करने की उत्सुकता सी होने लगे उसे ही सत्त्वगुण समझना चाहिए।

तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किञ्चिदात्मनि लक्ष्येत्
प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत्।।[15]

वेदभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम्।।[16]

अर्थात् वेदों का अभ्यास, तप, ज्ञान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धर्माचरण तथा आत्मा का चिन्तन ये सत्त्वगुण के लक्षण हैं।

जिस कर्म के करने पर उसके सार्वजनिक रूप से विज्ञापन की इच्छा होती है, जिसे करते हुए किसी प्रकार की लज्जा अथवा ग्लानि की अनुभूति नहीं होती और जिससे आत्मा को विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है इस कर्म को सात्त्विक अथवा सत्त्वगुणी कर्म समझना चाहिए।

यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्नलज्जति चाचरन्।
येन तुष्यति चात्माऽस्य तत्सत्त्वगुणलक्षम्।।[17]

धर्मभावना सत्त्वगुण का प्रधान लक्षण है[18] इसीलिए श्रेष्ठ है, उत्तम है।

सत्त्वगुणी देवयोनि में उत्पन्न होते हैं।[19]

सत्त्वगुण में भी उत्तम, मध्यम व अधम गति का उल्लेख मनुस्मृति में इस प्रकार हुआ है।

ब्रह्मा, विश्व के सर्जक धर्म (ब्रह्माण्ड), अव्यक्त प्रकृति तथा महत्तत्त्व को विद्वान् सत्त्वगुण की उत्तम गति कहते हैं।

ब्रह्माविश्वसृजो धर्मो महानव्यक्तमेव च।
उत्तमां सात्त्विकीमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः।।[20]

याज्ञिक, ऋषि, देवता, वेद, नक्षत्र, दिन, पितर और साध्यगण सत्त्वगुण की मध्यम गति के जीव हैं।

यज्वान ऋषयो देवाः वेदो ज्योतींषि वत्सराः।
पितरश्चैव साध्याश्च द्वितीया सात्त्विकी गतिः।।[21]

तपस्वी, संन्यासी, ब्राह्मण, विमानों पर घूमने वाले देवगण, नक्षत्र और दैत्य सत्त्वगुण की अधम गति के जीव हैं।

तापसाः यतयो विप्राः ये च वैमानिकाः गणाः।
नक्षत्राणि च दैत्याश्च प्रथमा सात्त्विकी गतिः।।[22]

रजोगुण– यत्तु दुःखसत्तायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः।
तद्रजोऽप्रतितं विद्यात्सततं हारि देहिनाम्।।[23]

अर्थात् दुःख की सत्ता से युक्त, अपनी आत्मा के लिए अप्रिय तथा प्राणियों को परमात्मा से हटाकर इन्द्रियों के विषयों की ओर आकृष्ट करने वाला गुण रजोगुण है।

नये–नये कार्यों को करने में रूचि होना, फलप्राप्ति की अधीरता, असत् (निषिद्ध) कार्यों में प्रवृत्ति तथा विषयों का निरन्तर भोग, ये तमोगुण के लक्षण हैं।

आरम्भ रूचिताऽधैर्यमसत्कार्यपरिग्रहः।
विषयोपसेवा चाजस्त्रं राजसं गुणलक्षणम्।।[24]

येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलाम्।
न च शोचत्यसम्पत्तौ तद्विज्ञेयं तु राजसम्।।[25]

अर्थात् जिस कर्म से लोक में विपुल यश और प्रसिद्धि मिलती हो तथा न मिलने पर शोक उत्पन्न न होता हो उस कर्म को राजस कर्म समझना चाहिए।

अर्थतृष्णा रजोगुण का प्रधान लक्षण है[26] तमोगुण की अपेक्षा श्रेष्ठ है है और सत्त्वगुण से न्यून है अर्थात् मध्यम कोटि का है। रत्जोगुणी मनुष्य योनि में उत्पन्न होते हैं।[27]

रजोगुण की उत्तम योनि के जीव हैं– गन्धर्व, गुह्यक, यक्ष, देवताओं के सेवक तथा सभी अप्सराएँ–

गन्धर्वाः गुह्यकाः यक्षाः विबुधानुचराश्च ये।
तथैवाप्सरसः सर्वाः राजसीषूत्तमा गतिः।।[28]

मध्यम योनि के महानुभावों में राजा लोग, क्षत्रिय, राजाओं के पुरोहित, तर्कपटु पण्डित और युद्ध–कुशल व्यक्ति।

अधम (निकृष्ट) योनियों में उत्त्पन्न होने वाले व्यक्ति हैं– झल्ल, मल्ल, नट, शस्त्र से आजीविका चलाने वाले, जुआ और मद्यपान में आसक्त रहने वाले।

तमोगुण– यत्तु स्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकम्।
अप्रत्क्र्यमविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत्।।[29]

अर्थात् मोहमूलक, अप्रकट, विषयों की ओर उन्मुख करने वाला तथा तर्क और बुद्धि द्वारा न जाना जा सकने वाला गुण तमोगुण है।

लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्यं नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता।
याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम्।।[30]

अर्थात् लोभ, निद्रा, अधीरता, क्रूरता, नास्तिकता, शास्त्रोक्त विधि से भिन्न (विपरीत) व्यवहार, याचना वृत्ति तथा प्रमाद ये सब तमोगुण के लक्षण हैं।

जिस कर्म को करके, करते हुए अथवा भविष्य में करने के विचार पर अर्थात् भूत वर्तमान और भविष्य में मनुष्य को लज्जित होना पड़े विद्वान् व्यक्ति उस कर्म को तमोगुणी समझे।

यत्कर्मं कृत्वा कुर्वश्च करिश्यंश्च लज्जति।
तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम्।।[31]

काम (कामुकता, या कामवासना) तमोगुण का प्रधान लक्षण है।[32] तमोगुण सबसे (सत्त्वगुण व रजोगुण से) निकृष्ट है।

उत्तमतामस योनियों में चारण, पक्षी, दम्भी, राक्षस (हिंसक) तथा पिशाच (दुराचारी) योनियाँ प्राप्त होती हैं।

चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरूषाश्चैव दाम्भिकाः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च तामसीधूनमा गतिः।।[33]

तामस योनियों में हाथी घोड़ा, शूद्र, निन्दित, म्लेच्छ, सिंह, व्याघ्र और सुअर जैसी योनियाँ रजोगुण के प्रभाव से मिलने वाली मध्यम योनियाँ है।

हस्तिनश्च तुरंगाश्च शूद्रा म्लेच्छाश्च गर्हिताः।
सिंहव्याघ्रवराहाश्च मध्यमा तामसी गतिः।।[34]

स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पा सकच्छपाः।
पशवश्च मृगाश्चैव जघन्या तामसी गतिः।।[35]

अर्थात् वृक्षादि जड़, कीट–मकोट, मत्स्य, सर्प, कछुए पशु और आखेट किये जाने वाले मृग आदि पशु योनियों की तमोगुण के प्रभाव से मिलने वाली निकृष्ट योनियाँ समझना चाहिए।

इस प्रकार तीनों गुणों के तीन प्रकार के (उत्तम, मध्यम, अधम) फल की समग्र जानकारी दी गई।[36] उक्त तीनों गुणों के आधार पर जीव की तीन गतियाँ भी देश काल तथा गुण आदि के भेद से पुनः तीन प्रकार की हो जाती हैं। मनुस्मृति में कहा गया है कि– विप्रों! मैंने आप लोगों को तीन गुणों के आधार पर तीन प्रकार के कर्मों और उनके फलस्वरूप सारे संसार के सभी प्राणियों की तीन प्रकार की स्थितियों के रूप में 'त्रिविधा सृष्टि' का परिचय दिया है।

सन्दर्भ

1. मनु0 1/61
2. मनु0 1/65
3. ऋ0 1/80/16
4. मनु0 12/16
5. मनु0 2/7
6. तै0सं0 2–2–10–2
7. मनु0 2/20
8. तै0 आ0 1/2
9. सांख्य0 13वीं कारिका
10. सांख्यसूत्र 1/127
11. सांख्य0 12वीं कारिका
12. श्रीमद्भगवद्गीता 14/10
13. मनु0 12/25
14. मनु0 12/26

15. मनु0 12/28
16. मनु0 12/32
17. मनु0 12/38
18. मनु0 12/39
19. मनु0 12/41
20. मनु0 12/51
21. मनु0 12/50
22. मनु0 12/49
23. मनु0 12/29
24. मनु0 12/33
25. मनु0 12/37
26. मनु0 12/39
27. मनु0 12/41
28. मनु0 12/48
29. मनु0 12/30
30. मनु0 12/34
31. मनु0 12/36
32. मनु0 12/39
33. मनु0 12/45
34. मनु0 12/44
35. मनु0 12/47
36. मनु0 12/31

***